# ब्रिटिश काल में भारतीय शिक्षा प्रणाली में हुए सुधारों का विश्लेषण

Dr. Rajkumar, Assistant Professor, Department of History, Seth G.L. Bihani S.D. Post Graduate, Sriganganagar

## सारांश

भारत की शिक्षा प्रणाली का इतिहास अत्यंत प्राचीन और समृद्ध रहा है। वैदिक कालीन गुरुकुल परंपरा से लेकर नालंदा, तक्षशिला, विक्रमशिला जैसे विश्वविद्यालयों तक, भारत सदियों तक वैश्विक ज्ञान का केंद्र रहा है। इन संस्थानों में न केवल धार्मिक और दार्शनिक शिक्षा दी जाती थी, बल्कि गणित, खगोलशास्त्र, चिकित्सा, और शासन जैसे विविध विषयों में भी गहन अध्ययन होता था।

हालांकि, 18वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन की स्थापना के साथ भारतीय शिक्षा व्यवस्था में निर्णायक परिवर्तन आने लगे। औपनिवेशिक शासन ने शिक्षा को एक नीति उपकरण के रूप में प्रयोग किया, जिसका उद्देश्य भारतीय समाज को अपने प्रशासनिक एवं सांस्कृतिक हितों के अनुरूप ढालना था। ब्रिटिश काल में लागू की गई शिक्षा नीतियों एवं सुधारों का आलोचनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। इसमें इन सुधारों के घोषित एवं अव्यक्त उद्देश्यों, उनके प्रभावों तथा भारत के सामाजिक-सांस्कृतिक ढांचे पर पड़े दीर्घकालिक परिणामों का विस्तार से अध्ययन किया गया है। साथ ही यह शोध ब्रिटिश शिक्षा नीति की विरासत को समझने और स्वतंत्र भारत की शिक्षा व्यवस्था पर उसके प्रभावों को उजागर करने का प्रयास करता है।